19

# पावर का बहाल होना

## ( फिलिप्पियों 4:21-23 )

आरकैंसा में हाल ही में एक ज़बर्दस्त, भयानक आंधी वाला खतरनाक तूफ़ान आया था। इससे मेरे आंगन में बड़े पीकन के पेड़ सहित कई पेड़ों के साथ साथ बिजली की कुछ तारें भी गिर गईं। कुछ घंटे हमारे घर की बिजली बन्द रही; कई इलाकों में तो कई दिनों तक बिजली यानी पावर नहीं आई। तूफ़ान के बाद लगभग हर गली में बिजली वालों का पावर बहाल करने के लिए मरमत करने वाली गाड़ी आ गई। हम में से कइयों ने ''तूफ़ानों'' अर्थात व्यक्तिगत तूफ़ानों, भावनात्मक तूफ़ानों, सदमा पहुंचाने वाले तूफ़ानों को अपने जीवनों में झेला है। जिस कारण कइयों को लगता है कि उनकी ''पावर'' या ''बिजली चली गई'' है। कुछ तो बैठकर अपने दिल की बात कह देते हैं अन्य दुखी, निराश या उदास हो जाते हैं उन ''पावर'' यानी ''बिजली आनी'' आवश्यक है।

### उपदेशों के द्वारा पावर (फिलिप्पियों की मुख्य मुख्य गणनाएं)[1]

फिलिप्पियों की पुस्तक पावर पर बहुत कुछ कहती है। अध्याय 2 में पौलुस ने कहा कि ''परमेश्वर ही है, जिस ने ... तुम्हारे मन में ... प्रभाव डाला है'' (आयत 13)। ''प्रभाव डाला'' का अनुवाद यूनानी शब्द से किया गया है जिससे हमें ऊर्जा के लिए अंग्रेज़ी शब्द ''energy'' मिला है। परमेश्वर हमें *ऊर्जावान* करता है! अध्याय 3 में प्रेरित ने लिखा कि एक दिन प्रभु ''अपनी *शक्ति* के उस प्रभाव के अनुसार जिसके द्वारा वह सब वस्तुओं को अपने वश में कर सकता है हमारी दीन-हीन देह का रूप बदल ... देगा'' (आयत 21)। अध्याय 4 में पौलुस ने दावा किया, ''जो मुझे *सामर्थ देता है* उस में मैं सब कुछ कर सकता हूं'' (आयत 13)। ''सामर्थ देता'' के अर्थ वाला यूनानी शब्द वही है जिससे हमें ''डायनामाइट'' शब्द मिला है!

हमारे जीवनों में ''पावर'' ''बहाल'' होने का एक ढंग फिलिप्पियों की पुस्तक के उपदेशों को जीवन का भाग बनाना यानी उसका भाग बनाना है जो हम हैं। जो समय हम ने फिलिप्पियों की पुस्तक का अध्ययन पर लगाया है यदि इस पत्र के नियमों को व्यवहार न डाला जाए तो वह सब व्यर्थ होगा।

> ... उस वचन को नम्रता से ग्रहण कर लो, जो हृदय में बोया गया और जो तुम्हारे प्राणों का उद्धार कर सकता है। परन्तु वचन पर चलने वाले बनो, और केवल सुननेवाले ही नहीं जो अपने आप को धोखा देते हैं। क्योंकि जो कोई वचन का सुनने वाला हो, और उस पर चलने वाला न हो, तो वह उस मनुष्य के समान है जो अपना स्वाभाविक मुंह दर्पण में देखता है। इसलिए कि वह अपने आपको देखकर चला जाता, और तुरन्त भूल जाता है कि मैं कैसा था। पर जो व्यक्ति स्वतन्त्रता की सिद्ध व्यवस्था पर ध्यान करता रहता

है, वह अपने काम में इसलिए आशीष पाएगा कि सुनकर भूलता नहीं, पर वैसा ही काम करता है (याकूब 1:21-25)।

स्थान प्रेरित की विस्तृत व्याख्या करने की अनुमति नहीं देगा पर हम इस शृंखला के पूरे विषय पर ध्यान देने के लिए कुछ समय लगाते हैं: ''*आनन्द भरी* मसीहियत'' बार-बार प्रेरित ने हमें ''आनन्दित'' होने को कहा है (फिलिप्पियों 3:1; 4:4)। ''आनन्द'' यहां ''*मसीह में*''पाए जाने वाले को ही कहा जा सकता है (देखें 4:7, 19 )। मेरी प्रार्थना है कि जो भी इस अध्ययन में भाग ले वह मसीह में बपतिस्मा लिया हुआ हो (रोमियों 6:3, 4; गलातियों 3:27) और अब उसका वफ़ादार है (मत्ती 16:24)। सामर्थ से भरे इस नन्हें पत्र में दिए गए निर्देशों को मानकर आप उसकी बात मानकर अच्छी शुरुआत कर सकते हैं!

## लोगों के द्वारा पावर

उम्मीद है कि आपने फिलिप्पियों के इस अध्ययन को केवल पड़ा ही नहीं बल्कि इस पत्र में परमेश्वर की आज्ञाओं को माना भी है और इससे ऊर्जावान हुए हैं। परन्तु अभी खत्म नहीं हुआ है। पिछले पाठ में पौलुस 4:19, 20 के इस चरम में पहुंचा था: ''और मेरा परमेश्वर भी अपने उस धन के अनुसार जो महिमा सहित मसीह यीशु में है तुम्हारी एक घटी को पूरी करेगा। हमारे परमेश्वर और पिता की महिमा युगानुयुग होती रहे। आमीन।'' समाप्ति के लिए यह अच्छी जगह लगती है पर पौलुस ने कुछ और मामलों पर बात करनी थी। हम अन्तिम तीन आयतों को प्रेरित की ''ps'' (''पोस्ट स्क्रिप्ट'') मान सकते हैं।

कइयों का विचार है कि आयत 20 के बाद पौलुस ने कलम उठाई और अन्तिम पंक्तियां व्यक्तिगत रूप में लिखीं। थिस्सलुनीकियों के नाम अपने दूसरे पत्र में, अन्त के निकट, उसने कहा, ''मैं, पौलुस, अपने हाथ से नमस्कार लिखता हूं। हर पत्री में मेरा यही चिह्न है; मैं इसी प्रकार से लिखता हूं'' (2 थिस्सलुनीकियों 3:17; देखें गलातियों 6:11; कुलुस्सियों 4:18)। चार्ल्स स्विंडल ने लिखा है, ''मैं सफेद बालों वाले प्रेरित को हथकड़ी लगी अपनी बाजू इपफ्रुदीतुस की ओर करते हुए उसके आथ से सुई लेते हुए ... और अपने हाथ से इन अन्तिम शब्दों को लिखने की कल्पना कर सकता हूं:''[2]

> हर एक पवित्र जन को जो यीशु मसीह में है नमस्कार कहो। जो भाई मेरे साथ हैं, तुम्हें नमस्कार कहते हैं। सब पवित्र लोग, विशेष करके जो कैंसर के घराने के हैं, तुम को नमस्कार कहते हैं।
>
> हमारे प्रभु यीशु मसीह का अनुग्रह तुम्हारी आत्मा के साथ रहे (फिलिप्पियों 4:21-23)।

हम पक्का नहीं बता सकते कि पौलुस ने यह शब्द अपने ही हाथों से लिखे, पर एक बात साफ़ है कि उसने उन लोगों पर ध्यान किए बिना जो उसके प्रिय थे पत्र बन्द करना नहीं चाहा। आत्मिक ''पावर'' को ''बहाल'' करने में सहायता करने का परमेश्वर का एक ढंग लोगों के द्वारा है।

## हर पवित्र जन

आयत 21 का आरम्भ होता है, ''हर एक पवित्रजन को जो यीशु मसीह में है नमस्कार कहो।'' जैसा कि पहले कहा गया है, ''सन्त'' या ''पवित्र जन'' का अर्थ है ''अलग किया हुआ'' और यह पद हर मसीही पर लागू होता था (देखें 1 कुरिन्थियों 1:2; फिलिप्पियों 1:1)। तौभी यह शब्द ऊंची की गई खुशकिस्मती और पवित्र जीवन जीने की जिम्मेदारी को याद दिलाता रहता था।''[3] पौलुस ने यह पत्र फिलिप्पी में रहने वाले ''हर एक पवित्र जन को जो यीशु मसीह में है'' (1:1)। अब समापन करते हुए उसने हर एक को सलाम भेजा।

पौलुस ने ''हर पवित्र जन को सलाम भेजने'' के लिए किए कहा? शब्द फिलिप्पी की कलीसिया के सभी लोगों के लिए हो सकते हैं; उनका अर्थ केवल यह हो सकता है कि ''एक दूसरे को सलाम कहो।'' जब मैं रोमानिया में अपनी बेटी और परिवार को लिखता हूं तो मैं आम तौर पर उन से कहता हूं ''मेरी ओर से सब को गले लगकर सलाम कहना।'' परन्तु पौलुस ने अपने आरम्भिक शब्दों में मण्डली के अगुओं को विशेष रूप से उल्लेख नहीं किया (1:1), सम्भवतया वह उन अगुओं से अपना सलाम अन्य सदस्यों को देने के लिए कह रहा होगा।

कुछ लोगों को आश्चर्य होता है कि अपने पत्रों के अन्त में जैसे पौलुस कई बार नामों की सूची देता था उसने यहां क्यों नहीं दी (देखें रोमियों 16:3-15)। आम तौर पर पौलुस ऐसा तब करता था जब उसे मण्डली के कुछ लोगों का नाम पता होता था, परन्तु वह सम्भवतया उन सब को जानता था जो फिलिप्पी में कलीसिया के साथ आराधना करते थे। यदि वह एक एक का नाम लिखने लगता तो किसी का नाम छूट भी सकता था। हाल ही में मैंने एक कलीसिया को पत्र लिखा जहां मैं एक परिवार को जानता हूं और मैंने यह नोट लिख दिया: ''[परिवार के सब लोगों का नाम लेते हुए] सलाम कहना।'' परन्तु यदि मुझे मिडवेस्ट सिटी, ओक्लाहोमा की इस्ट साइड चर्च को लिखना होता तो मैं किसी एक का नाम शामिल करने का साहस नहीं करता। मैं चालीस से अधिक वर्षों से उस मण्डली से जुड़ा हूं और निश्चय ही कोई विशेष विषय मुझसे छुट सकता है।

पौलुस ने आगे कहा, ''जो भाई मेरे साथ हैं, तुम्हें नमस्कार कहते हैं'' (फिलिप्पियों 4:21ख)। ''जो भाई'' सम्भवतया उन्हीं को कहा गया है जो रोम में प्रेरित की सेवकाई में उसके सहभागी हैं जिसमें तीमुथियुस (1:1) और अन्य लोग (देखें कुलुस्सियों 4:14; फिलेमोन 23, 24)। (हम ने पहले ही अनुमान लगा लिया है कि उस समय रोम में केवल तीमुथियुस ही था [फिलिप्पियों 2:20], परन्तु फिलिप्पी की कलीसिया में और लोग भी अपनी शुभकामनाएं बताना चाहते होंगे।)

उसके बाद पौलुस ने लिखा, ''सब पवित्र लोग, ... तुम को नमस्कार कहते हैं'' (आयत 22क, ग)। ये ''पवित्र लोग'' रोम की कलीसिया के अन्य लोग होंगे। पौलुस मसीही सलाम और सहभागिता को इधर से उधर और उधर से इधर भेजना चाहता था।

## विशेष पवित्र लोग

फिर पौलुस ने पवित्र लोगों के एक विशेष समूह को अलग किया जिन्होंने सलाम भेजा था: ''विशेष करके जो कैसर के घराने के हैं'' (आयत 22ख)। ''कैसर'' रोम के सभी सम्राटों

को दिया जाने वाला नाम था। जिस कैसर की बात पौलुस कर रहा था वह नीरो ही था, जिसने 54-68 ईस्वी के लगभग रोमी सम्राज्य पर हुकूमत की थी। ''जो कैसर के घराने के हैं'' कहते समय प्रेरित के मन में कौन से लोग थे? उस संक्षिप्त वाक्यांश में हज़ारों लोगों की कल्पना जगाई है और अनुमान के संख्य पृष्ठ लिखवाएं हैं।

यदि आपको ''डेविड रोपर का घराना'' कहना हो तो आपके कहने का अर्थ मेरे और मेरी पत्नी के लिए होगा। (कालांतर में, इस वाक्यांश में मेरी तीन बेटियां भी शामिल होंगी।) इसको अधिकतर व्यक्ति ध्यान दिलाते हैं कि ''कैसर के घराने के शब्दों'' में नीरो के खून के रिश्तेदार हो सकते हैं, परन्तु आवश्यक नहीं कि वे हों। एक अधिकारी ने इसकी व्याख्या की कि ये लोग ''उपलब्ध इस्तेमाल के अनुसार, सम्राट के परिवार के लोग या उसके रिश्तेदार नहीं बल्कि उसके दरबार के सेवक'' थे।[4]

हमने पहले इस सम्भावना पर ध्यान दिया था कि नीरो के श्रेष्ठ टुकड़ियों में से यानी पौलुस की रक्षा के लिए जिम्मेदार लोग थे जो मसीहियत में परिवर्तित हो गए थे (देखें 1:13)। आरम्भिक कलीसिया के कुछ लेखकों ने यह भी अनुमान लगाया कि पौलुस ने मिलने प्रमुख रोमी अधिकार जाते थे जो उससे प्रभावित थे।[5] एक दन्तकथा यह भी फैल गई कि नीरो की पत्नी मसीही बन गई थी।[6] हमें सचमुच कोई विचार नहीं है कि ''कैसर के घराने'' में प्रभु में कौन परिवर्तित हुआ था, पर हम इतना पक्का कह सकते हैं कि उस घराने का हर व्यक्ति जो पौलुस से मिला अन्त में चकित हुआ कि ''*तुम बेड़ियों में क्यों हो?*'' इससे प्रेरित को यीशु के विषय में बताने का सही अवसर मिल गया। जिस कारण उन्होंने खुद को परिवर्तिर कर लिया (रोमियों 1:16) और फिर यही लोग सुसमाचार की बुलाहट में ले गए।

फिलिप्पियों के नाम अपने पत्र में पौलुस ने यह टिप्पणी क्यों शामिल किया? शायद उसे लगा कि इससे उन्हें रोम में सुसमाचार की सामर्थ को जानने के लिए प्रोत्साहन मिलेगा, जो सभ्य संसार का केन्द्र था। फिलिप्पी की कलीसिया के लोगों और कैसर के घराने के मसीही लोगों के बीच में भी सम्बन्ध हो सकते हैं। याद रखें कि फिलिप्पी एक रोमी बसती थी। इसके निवासी रोमी युद्धों के योद्धा रहे होंगे जिन्हें अपने देश की सेवा के आंशिक वेतन के रूप में फिलिप्पी में भूमि दी गई थी। इनमें से कुछ लोग जिनके अभी भी रोम में नीरो की सेवा में सेनाओं के साथ सम्बन्ध थे मसीही बन गए थे। विल्बर फिल्डज ने सुझाव दिया है कि 4:22 में ''विशेष करके'' शब्द ''इस बात की ओर ध्यान दिलाता प्रतीत होता है कि कैसर के घराने के मसीही लोग विशेष करके चाहते थे कि फिलिप्पियों को ऐसी कठिन परिस्थितियों के उनके होने का पता चलते और वे [उनकी] प्राथनाओं और सहभागिता के इच्छुक थे। ...''[7]

हम उन सभी प्रश्नों का उत्तर नहीं दे सकते जो ''पवित्र लोग ... जो कैसर के घराने के हैं'' के कौतुहल उत्पन्न करने वाले वाक्यांश के बारे में पूछे जा सकते हैं, परन्तु यह सोचना कि सुसमाचार ''दुष्टता की मांद'' में घुस चुका था, दंग करने वाला है। लेखकों और विद्वानों की टिप्पणियों का एक नमूना इस प्रकार है:

> वह अन्तिम दायरों में से एक था जहां ''पवित्र लोगों'' के होने की सम्भावना हो सकती थी। ... नीरो एक तानाशाह [था] जिसका नाम भ्रष्ट चरित्रता और क्रूरता का प्रयाय बन

गया था। उसका ''घराना'' कैसा था, इसकी कल्पना करना कठिन नहीं होगा। पर अंधकार और अंधविश्वास और दुष्टता के बीच में भी मसीह के सुसमाचार ने जड़ पकड़ ली थी और अच्छा फल लाया था।[8]

अविश्वास के गड़ में ही आक्रमण करके उस पर उसमें प्रवेश कर लिया था। ... उन्हीं कमरों में जहां उसका नाम नहीं लिया जा सकता था, मसीह प्रभु बन गया; और उस पर खुलकर बात होने लगी। और यह सब नीरो की नाक के नीचे हो रहा था![9]

इन लोगों के पास 100 प्रतिशत रोमी और कैसरी बनकर पाने को सब कुछ था, मसीही बनकर सब कुछ खोने को [था]। पर वे मसीही लोग [थे]। उन्होंने नीति से ऊपन नियम को, जीवन से बढ़कर प्रेम को और कैसर से बढ़कर ख्रिस्तुस को पहल दी।[10]

इन पवित्र लोगों में से अधिकतर की वफ़ादार गवाही का अर्थ सम्भवतया, मलभूमि, जंगली जन्तु, सताव और मृत्यु होगी; परन्तु उनकी न खत्म होने वाली याद कलीसिया ... के मन में चमक रही है, इस सलाम के कारण जो उन्होंने फिलिप्पी में पवित्र लोगों के लिए भेजा था। ...[11]

इस तथ्य से सबक लिए जाने चाहिए कि कैसर के घराने में पवित्र लोग थे। एक सबक यह है कि यदि सुसमाचार उस माहौल में रहने वाले लोगों के पास पहुंच सकता है तो यह *किसी भी* महोल में रहने वाले लोगों तक जा सकता है। सुसमाचार सामर्थी है (1:16)! शायद अधिकतर लोगों के लिए सबक है कि वे मसीही, बल्कि वफ़ादार मसीही बन सकते हैं, जहां भी परमेश्वर उन्हें रखे। अर्डमैन ने टिप्पणी की है:

ऐसी कोई शर्त नहीं है कि मसीह सामर्थ उस पर विजय नहीं पा सकती। कई परिस्थितियों में आत्मिक जीवन उतनी आसानी से नहीं बढ़ता जितनी आसानी से अन्य स्थानों में बढ़ता है, पर यह मूर्तिपूजक सम्राट के दरबार में भी बढ़कर आनन्द दे सकता है।

कैसर के घराने में पवित्र लोगों को पाना आश्चर्यजनक हो सकता है, फिर भी यह भी ध्यान दिया जाना चाहिए कि इसी जगह पवित्र लोगों की सबसे अधिक आवश्यकता थी। ... जहां संसार की स्थिति सबसे बुरी होती है, वहां कलीसिया को सबसे बढ़िया होना चाहिए। ...

फिर, यह भी टिप्पणी की जा सकती है कि कैसर का घराना असाधारण प्रभाव का केन्द्र भी हो सकता है। वफ़ादार गवाहों का अर्थ शाही नगर के किसी भी अन्य दायरे से बढ़कर मसीह के कार्य के लिए होना हो सकता है।[12]

आप अपने ''कैसर के घराने'' में हो सकते हैं:

- ऐसे परिवार में जहां परमेश्वर और उसके मार्ग का सम्मान नहीं किया जाता।
- शिक्षा के ऐसे स्थान में जहां परमेश्वर और बाइबल का मज़ाक उड़ाया जाता है।
- ऐसे काम में जहां मसीही नियमों को दण्डित किया जाता है।

- सेना की ऐसी टुकड़ी में जहां सांसारिकता भरी हुई है।
- ऐसे समाज में जो ''अपरम्परागत'' धार्मिक अभिव्यक्ति को दण्डित करता है।
- ऐसी दण्डात्मक संस्था में जहां क्रूरता और दुष्टता को आम बात माना जाता है।

यदि आप अपने आपको ऐसी स्थिति में पाएं, तो ''इस संसार के सदृश्य न बनें; परन्तु तुम्हारे मन के नये हो जाने से तुम्हारा चाल चलन भी बदलता जाए'' (रोमियों 12:2)। परमेश्वर में भरोसा रखें कि वह आपकी सहायता करे। यह आसान नहीं होगा पर प्रभु की सहायता से आप ''कैसर के घराने में'' पवित्र जन बन *सकते* हैं!

**सब पवित्र जन**

फिलिप्पियों 4:21, 22 को छोड़ने से पहले पौलुस द्वारा दिए गए सभी लोगों पर ध्यान देने के लिए रुकते हैं। वे कितना अद्‌भुत प्रतिनिधिक समूह बनाते हैं! पहले उसने ''पवित्र जनों'' यानी कलीसिया के सामान्य लोगों का नाम लिया। फिर उसने ''जो भाई मेरे साथ हैं'' की बात करते हुए प्रचारकों, शिक्षकों तथा अन्य अगुओं की बात की। अन्त में ''कैसर के घराने'' के पवित्र लोग भी थे! प्रभु की देह में कई लोग बल्कि हर प्रकार के लोग होते हैं और हमें एक दूसरे से सामर्थ मिलती है। ''वैसा ही हम जो बहुत हैं, मसीह में एक देह होकर आपस में एक दूसरे के अंग हैं'' (रोमियों 12:5); ''क्योंकि मसीह इसी लिए मरा और जी भी उठा कि वह मरे हुओं और जीवतों, दोनों का प्रभु हो'' (रोमियों 14:19)।

## एक व्यक्ति के द्वारा सामर्थ (4:23)

फिलिप्पियों में एक आयत रह गई: आयत 23 में आशीष वचन। हमें इस पर विचार करने के लिए समय देना आवश्यक है, क्योंकि यह ''पूरे पत्र का मुकुट है।''[13] पौलुस के समय में पत्र का समापन स्पष्ट ''विदाई'' करने की परम्परा थी, परन्तु प्रेरित ने अपनी पत्रियों का समापन आशीष वचन यानी अपने पाठकों के लिए प्रार्थना के साथ किया। शब्दों में अन्तर है परन्तु भावना मूल रूप में वही है: ''हमारे प्रभु यीशु मसीह का अनुग्रह तुम्हारी आत्मा के साथ रहे'' (आयत 23)।

**''अनुग्रह''**

पौलुस ने पत्र का आरम्भ फिलिप्पियों के लिए ''प्रभु यीशु मसीह की ओर से ... अनुग्रह'' की इच्छा से किया था (1:2)। अगले पद्य में उसने कई विषयों को लिया परन्तु अन्त में पहुंचने पर भी उसने प्रार्थना की मसीह का अनुग्रह (उसकी अद्‌भुत, अनार्जित कृपा) उनके जीविनों को आशीषित करे।[14]

KJV में 4:23 में तुम सब के साथ रहे'' है, परन्तु हस्तलिपी का प्रमाण ''तुम्हारी आत्मा के साथ रहे'' के पक्ष में है। जिस भी अनुवाद का इस्तेमाल किया जाए अर्थ मूलतया वही रहता है। इस संदर्भ में ''आत्मा'' ''अन्य अंगों से अलग मनुष्य का एक अंग'' नहीं ''बल्कि भीतरी'' ओर से देखा गया पूर्ण व्यक्ति, यानी उसका अस्तित्व है [देखें गलातियों 6:18; 2 तीमुथियुस 4:22; फिलेमोन 25]।[15] यदि ''आत्मा'' के शब्द के इस्तेमाल का कोई महत्व है तो यह इस बात पर ज़ोर देने के लिए हो सकता है कि *व्यक्ति की आत्मा* सबसे महत्वपूर्ण है। अनुग्रह से सबसे

अधिक लाभ आत्मा को ही होता है।

### ''प्रभु यीशु मसीह''

आयत 23 का सबसे महत्वपूर्ण भाग ''प्रभु यीशु मसीह'' वाला वाक्यांश है। ''एक है जो कैसर से बड़ा है, जिसने पौलुस के साथ कैद काटी, और वही जिसकी बात फिलिप्पियों के साथ अपने अन्तिम शब्दों में पौलुस करता है।''[16] प्रेरित का ध्यान फिर से यीशु पर लग गया जिससे वह प्रेम करता था।

विचार करने के लिए एक दृष्टांत है।[17] किसी हाकिम ने एक नगर में जाने का समय ठहराया। उस नगर के अधिकारियों की जिम्मेदारी हाकिम के उधर से कभी गुज़रने पर दरबार की साफ़ी सफ़ाई रखने की थी। वह वहां कभी गया नहीं था जिस कारण दरबार का कमरा मिलने जुलने का कमरा बन गया था। अधिकारियों को राजा के आने का पता चला तो उन्होंने जल्दी से कमरे को दरबार में बदले के लिए लोग लगा दिए। फिर उन्हें अहसास हुआ कि उन्हें तो याद भी नहीं कि सिंहासन कहां था! हर जगह निशान ढूंढ़ते ढूंढ़ते अन्ततः उन्हें राजा के आगमन से थोड़ा पहले एक धुंधला सा स्टोर वाला कमरा मिल गया। उनका अनुभव परेशान करने वाला और अपमान भरा था, परन्तु मैं आपको ऐसी स्थिति बताता हूं जो बहुत ही खतरनाक है: कइयों ने यीशु के ''सिंहासन को हटा दिया'' है। या तो उन्होंने भरोसे और आज्ञापालन के द्वारा (इब्रानियों 5:8, 9; देखें मरकुस 16:15, 16) उसे ''राजाओं के राजा'' (प्रकाशितवाक्य 19:16) का मुकुट नहीं पहनाया, या उन्होंनें अपने जीवनों में से हाकिम होने के रूप में उसे हटा दिया है (प्रकाशितवाक्य 1:5)। पौलुस ने यीशु को अपने मन के सिंहासन पर बिठाया था यानी उसने उसे ''प्रभु यीशु मसीह'' के रूप में पहचाना था!

### आमीन

KJV में ''आमीन'' शब्द के साथ इस आशीष वचन का समापन किया गया है। वचन के अति आदुनिक सम्पादकों द्वारा इस शब्द को छोड़ दिया गया है; परन्तु गेरलर्ड हाथॉर्न के साथ इसके पक्ष में परिणाम मजबूत हैं।[18] जो भी हो यह फिलिप्पी की कलीसिया और हर जगह और युग में यीशु मसीह की कलीसिया के लिए प्रेरित की प्रार्थना का उपयुक्त प्रत्युत्तर बनाता है।[19] '''आमीन' के साथ समाप्त करते हुए पौलुस उस सत्य की पुष्टि करता है जो उसने कहा है, और मण्डली आशीष वचन में सुनी गई परमेश्वर की प्रतिज्ञाओं के लिए 'हां' के साथ उत्तर देती है।''[20]

## सारांश

फिलिप्पियों के नाम पौलुस का पत्र खत्म हो गया था। या तो उसने लिखवाना बन कर दिया या यदि उसने अन्तिम पक्तियां लिखीं तो उसने कलम रख दी। सियाही सूख जाने पर उसने यह निर्देश देते हुए कि वह यह पत्र किसे दे, इपफ्रुदीतुस को अन्तिम निर्देश दिए होंगे। कोई संदेह नहीं कि प्रेरित ने इपफ्रुदीतुस की सुरक्षित यात्रा के लिए स्वर्ग में प्रार्थना भेजी होगी। फिर उसने पत्री को लपेटकर इसे अपने सहकर्मी को देते हुए उसे गले लगाया होगा। (हम प्रेरितों 20:36, 37 में

वर्णित एक दृश्य में इसकी कल्पना कर सकते हैं।) हम दृढ़ संकलप सेवक के नज़रों से ओझल होने की कल्पना करते हुए निकल जाते हैं। CEV इस पत्री का समापन इन शब्दों के साथ किया गया है: ''मेरी प्रार्थना है हमारा प्रभु यीशु मसीह तुम्हारे साथ करूणा करे और तुम्हारे जीवन को आशीष दे!'' आपके लिए मेरी भी यही प्रार्थना है। यदि आपको अपने मन में ''सामर्थ'' बहाल करने की आवश्यकता हो तो उम्मीद है कि फिलिप्पियों के नाम ऊर्जा से भरे इस नन्हें से पत्र ने आपकी सहायता की है। परमेश्वर आपको आशीष दे।

---

टिप्पणियां

[1]हमारे पाठ का यह भाग पुस्तक की समीक्षा करने के अवसर के रूप में जोड़ा गया है। आप और विस्तृत समीक्षा कर सकते हैं। [2]चार्ल्स आर. स्विंडल, *लाफ़ अगेन* (डलास: वर्ड पब्लिशिंग, 1992), 237. [3]चार्ल्स आर. अर्डमैन, *दि एपिस्टल ऑफ़ पॉल टू द फिलिप्पियंस* (ग्रैंड रैपिड्स, मिशिगन: बेकर बुक हाउस, 1983), 152. [4]विलियम एफ़. अर्ंट एंड विल्बर गिंगरिच, *ए ग्रीक-लैक्सिकन ऑफ़ द न्यू टैस्टामेंट एंड अदर अर्ली क्रिश्चियन लिटरेचर,* चौथा संस्क., संशो. व विस्ता. (शिकागो: यूनिवर्सिटी, इलिनोइस: इंटरवर्सिटी प्रैस, 1957), 560. [5]अर्ल एफ़. पामर, *इंटेग्रिटी इन ए वर्ल्ड ऑफ़ प्रिटेंस: इन्साइट्स फ्रॉम द बुक ऑफ़ फिलिपियंस* (डाउनर्स ग्रोव, इलिनोइस: इंटरवर्सिटी प्रैस, 1992), 176-77. [6]स्विंडल, 235, देखें वेंडल विंक्लर, ''क्रिश्चियन फैलोशिप: गॉड विल प्रोवाइड; सेंट इन सीज़र'स हाउसहोल्ड; सेल्युटेशंस एंड बेनेडिक्शन,'' *ए होमिलेटिक कमैंट्री ऑन द बुक आफ़ फिलिपियंस,* संपा. गारलैंड एल्किन्स एंड थॉमस, बी. वारेन (मेम्फिस: गेटवेल चर्च ऑफ़ क्राइस्ट, 1987), 289-90. [7]विल्बर फील्डस, *फिलिपियंस-कोलोशियंस-फिलेमोन,* बाइबल स्टडी टैक्सट बुक सीरीज़ (जॉप्लिन, मिजोरी: कॉलेज प्रैस, 1969), 112. [8]अर्डमैन, 153. [9]स्विंडल, 235. [10]कैरल सिमकोक्स, दे *मेट एट फिलिप्पाय* (न्यू यॉर्क: ऑक्सफोर्ड यूनिवर्सिटी प्रैस, 1958), 158.

[11]अर्डमैन, 154. [12]वही, 153-154. [13]राल्फ. पी. मार्टिन, द *एपिस्टल ऑफ़ पॉल टू द फिलिपियंस,* संशो. संस्क., टिंडेल न्यू टैस्टामेंट कमैंट्रीज़, संपा. आर. वी. जी. टास्कर (ग्रैंड रैपिड्स, मिशिगन: विलियम बी. ईर्डमैंस पब्लिशिंग कं., 1987), 187. [14]आप जॉन न्यूटन के प्रसिद्ध गीत ''अमेज़िंग ग्रेस'' के बोल सुनने को रुक सकते हैं। उपयुक्त हो तो इस गीत को (या इसके अनुवाद को) अपने सुनने वालों से गंवाएं। [15]रिचर्ड बी. गफिन, नोट्स ऑन फिलिपियंस, द NIV *स्टडी बाइबल,* संपा. केन्नथ बार्कर (ग्रैंड रैपिड्स, मिशिगन: जौंडरवन पब्लिशिंग हाउस, 1985), 1810. [16]पामर, 177. [17]मैक्सी, डी. डन्नम, *गलेशियंस, इफिशियंस, फिलिपियंस, कोलोशियंस, फिलेमोन* दि कम्युनिकेटर'स कमैंट्री सीरीज़, संपा. लॉयड जे. ओगिल्वी (वाको, टैक्सस: वर्ड बुक्स, 1982), 275 से लिया गया। [18]गेरल्ड एफ़. हाथॉर्न, *वर्ड बिब्लिकल कमैंट्री,* अंक 43, *फिलिपियंस,* संपा. डेविड ए. हब्बर्ड एंड ग्लेन डब्ल्यू. बार्कर (वाको, टैक्सस: वर्ड बुक्स, 1983), 216. [19]मार्टिन, 187. [20]हाथॉर्न, 216.